ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—11/11/2020 दोहा एकादश -कबीरदास

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

<u>दोहा एकादश</u>

<u>- कबीरदास</u>

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै साँच है, ताकै हिरदै आप ।।१।

बोली एक अमोल है, जो कोई बोले जानि।

हिये तराजू तौलिके, तब मुख बाहर आनि।।२।।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप ।।३।।

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब।
~~~~~~~~~~

पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब ।।४।।

साँई इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।

मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।५।।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।

बिन पानी साबुन बिना, निरमल करै सुभाय।।६।।

दोस पराया देखकर, चले हसंत हसंत।

अपनो याद न आवई, जाको आदि न अंत।।७।।

जाति न पूछो साधु की पूछि लीजिए ग्यान।

मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान।।८।।

माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर।

करका मनका डारिदे, मन का मनका फेर ।।९।।

सोना, सज्जन, साधुजन, टूटिजुरैं सौ बार।

दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार।।१०।।

तिनका कबहुँ न निंदिए, जो पाँयन तर होय।

कबहुँक उड़ि आँखिन परै, पीर घनेरी होय।।११।।

छात्र कार्य-

दोहे को शुद्ध-शुद्ध लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"